SUPPLEMENTARY DEMANDS FOR GRANT FOR EXPENDITURE OF THE CENTRAL GOVERNMENT (EXCLUDING RAILWAYS) FOR THE YEARS 1971-72

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF FINANCE/**वित्त मन्त्रालय में उपमन्त्री** (SHRIMATI SUSHILA ROHATGI) Sir, I beg to lay on the Table a statement (in English and Hindi) showing the Supplementry Demands for Grants for Expenditure of the Central Government (Excluding Railways) for the year 1971-72 (August, 1971)

EIGHTH REPORT (1971-72) OF THE PUBLIC ACCOUNTS COMMITTEE

श्री श्याम लाल यादव (उत्तर प्रदेश): सीमा शुल्क सम्बन्धी राजस्व आय, 1970 के बारे मे लेखा परीक्षा प्रतिवेदन (सिविल) के अध्याय 2 के सम्बन्ध मे लोक लेखा समिति (1971-72) के आठवें प्रतिवेदन की एक प्रति मै सभा पटल पर रखता हू ।

THE FINANCE (NO 2) BILL, 1971—contd

श्री राजनारायण (उत्तर प्रदेश) : श्रीमन्, मै सदन के सम्मानित सदस्यों का यह जो देश की आज विचित्र स्थिति है उसकी ओर थोडे मे ध्यान आकर्षित करना चाहूगा । चाहे कितना ही अच्छा कानून बना लिया जाय मगर यदि उन कानूनो की ठीक तरीके से उपयोगिता के रूप मे करने की स्कीम न हो तो उससे जनता का कल्याण नही हो सकता । मुझे ऐसा लगता है कि इस सदन मे कुछ लोग पहले ही से ऐसा अपने दिमाग को बनाकर आते हैं कि जब भी सदन मे कोई सत्य बात कही जाय तो उसपर हल्ला जरूर मचाये । इससे जनतत्र नही चलता । जनतत्र तो विचारो का आदान-प्रदान है । जो सही बात जहा है अगर उससे फिसल कर बहस होगी तो फिर वह जनतत्रीय बहस नही है, वह हडभोग हो जाता है और फिर उसमे विचारो का आदान-प्रदान नही होता ।

यह सरकार आज हम से कुछ टैक्स लगाने का अधिकार चाहती है, कुछ टैक्स बढाने का अधिकार चाहती है । मगर मै पूछना चाहता हू कि यदि इस सरकार मे तनिक भी कर्तव्य-परायणता का ज्ञान है तो यह सरकार हमसे क्यो यह अधिकार चाहती है कि हम इसको कुछ टैक्स लगाने और कुछ टैक्स बढाने का अधिकार दे । इस सरकार के पास पहले ही से काफी धन है और उसका सदुपयोग होना चाहिए । ऐसी सूरत मे जब वित्त विधेयक पर बोलने के लिये ही हम खडे हुये है तो मै पूछना चाहूँगा कि इतने दिन होने के बाद भी जो 60 लाख रुपया नागरवाला के काड के रूप मे गया, उस रुपये के बारे मे आज तक इस सरकार ने सफाई के साथ कोई चर्चा क्यो नही कि । श्रीमन्, आप जानते है कि जब उस रुपये के बारे मे बार-बार प्रधान मंत्री का नाम लिया जाता है तब भी प्रधान मत्री के मुखारविद से उस रुपये के सम्बन्ध मे आज तक एक शब्द नही निकला जबकि गली-गली मे, कूचे-कूचे मे इस बात की चर्चा है कि चुनाव के लिये यह रुपया निकाला गया ।

श्री उपसभापति राजनारायण जी, फाइनेंस बिल पर बोलिये ।

श्री राजनारायण श्रीमन्, मै फाइनेंस बिल के बारे मे ही बोल रहा हू । तो मै यह निवेदन करूगा कि जिस देश का धन इतने